बनास जन

कविता समय

Scanned with OKEN Scanner

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 125 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–150 रुपये
250 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–275 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

अपनी बात		5
मोर्चे पर विदागीत : तपे हुए भावबोध की परिपक्व कविताएँ	कालूराम परिहार	7
इधर के गाँव-कस्बे में अभी इतनी मनुष्यता बची हुई है....	लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता	14
बौखलायी हुई नारी का संक्षिप्त एकालाप : यूँ तो सब कुछ पूर्ववत है	रश्मि कृष्णन	18
जीवनानुभवों से साक्षात्कार कराती 'फटी हथेलियाँ'	भावना मासीवाल	22
बहुआयामी प्रतिरोध के नए दरवाजे	प्रांजल धर	26
अप्रत्याशित की सुंदरता	आशुतोष प्रसिद्ध	29
दलित साहित्य से बहुजन साहित्य की ओर यात्रा करती कविताएँ	प्रमोद रंजन	34
प्रेम में पेड़ होना संभव है	गजेन्द्र कुमार मीणा	42
हमारे समय की जरूरी कविता : 'नीली बयाज'	शरद कुमार झारिया	46
युग का स्वर और विद्रोह की अनुगूँज	रजनी प्रताप	50
नई संभावनाओं की कविताएँ	रेखा सेठी	55
स्त्री चेतना की लयबद्ध पुकार : भाषा में नहीं	विनीत काण्डपाल	61
अस्तित्वपरक अनुपस्थिति में स्त्री मन की सम्पूर्णता को खोजती कविताएँ	विमलेश शर्मा	66
प्रतिबद्ध चेतना की ठहरी हुई आवाज	शंकर कुमार	70
पारम्परिक जीवन मूल्य और समसामयिक यथार्थ की काव्यात्मक प्रस्तुति	संगीता कुमारी	76
धर्म के पाँव में गड़ा हुआ काँटा	राजेन्द्र कैड़ा	81
प्रत्यक्ष अनुभवों का संवादधर्मी वितान	शिवदत्ता वावळकर	85
हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें	कामिनी	89
स्त्री के सर्वोत्तम रूप की अभिव्यंजना	नियति कल्प	94
कविता का आत्म-संस्कार : आत्मद्रोह	राजकुमार	98
युग की बयार में जीवन के रंग	रीता सिन्हा	102
सत्ता में बने रहने के लिए क्रूरता एक सात्विक अस्त्र है!	वीरेंद्र प्रताप	107
कविता के बहाने प्रकृति और मनुष्य की नैसर्गिकता की तलाश	कृष्ण कुमार पासवान	115
उम्मीदों का सहज कवि	सत्येन्द्र प्रताप सिंह	120
सधे शिल्प में अंचल का मर्सिया, नदियों के हवाले	उज्ज्वल शुक्ल	125
मैं स्त्री हूँ या कि सृष्टि	राजाराम भादू	129

Scanned with OKEN Scanner

हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें

कविता कादम्बरी के संग्रह 'हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें' में कुल चौहत्तर कविताएँ संकलित हैं। किश्वर नाहिद की कविता से लिए गए इस शीर्षक के बारे में संग्रह के आमुख में कविता कहती हैं, "गुनाहगार और बेशर्म औरतों का मुहावरा पितृसत्ता द्वारा गढ़ा हुआ भाषायी छल है जिसे धर्म, संस्कृति, शिक्षा, न्याय-व्यवस्था, पूँजी और राजनीति के गठबंधन ने पोषित किया है। यह कविता संग्रह पितृसत्ता और उसके सहबंधियों के प्रपंचों को उद्घाटित करते हुए गुनाहगार और बेशर्म औरतों की स्थापित परिभाषा को तोड़ते हुए, उसे एक नए मुहावरे के रूप में स्थापित करने का एक छोटा सा प्रयास है।"

कविता द्वारा आमुख में कही गई बात और संग्रह के शीर्षक को पितृसत्ता के खिलाफ मजबूती से खड़ी एक स्त्री के घोषणापत्र के रूप में देखा जा सकता है। वैसे तो कवि को अपनी कला के बारे में किसी भी तरह की घोषणा करने से बचना चाहिए क्योंकि इससे कविता के अर्थ वैविध्य की क्षति होने की संभावना बनती है, उसके बिंब अपनी स्वतंत्र इयत्ता खो देते हैं। कविताएँ बहुत लम्बी यात्रा करती हैं। दुनिया के हर कोने का पाठक अपनी जमीन पर खड़ा होकर उससे जुड़ता है और उसमें नए अर्थ भरता है, शायद इसीलिए बहुत से कवि स्वयं भूमिका लिखने से बचते हैं। ऐसे में सवाल बनता है कि कविता ने यह खतरा क्यों उठाया? इस सवाल के उत्तर को दो शब्दों में समेटा जा सकता है, संघर्ष और प्रतिबद्धता। इन कविताओं में एक औरत द्वारा अपनी जमीन की तलाश का संघर्ष और वर्गीय प्रतिबद्धता मुखर रूप में सामने आती है शायद इसीलिए वह ऐलानिया तौर पर मैदान में उतरती है। हाशिये पर खड़ा समाज चाहे वह दलित, आदिवासी हो या स्त्री, जब समाज के स्थापित ढाँचे और शक्ति संरचना से टकराता है तो उसके लिए घोषण-पत्र अहम हो जाता है। वह कला के स्थापित मानदंडों में फिट नहीं बैठता बल्कि उसे तोड़ कर नए मानक रचता है। इस अर्थ में देखें तो कविता कादम्बरी की प्रेम कविताएँ भी गहरे अर्थ में राजनीतिक हैं।

हमारे यहाँ अभिधा को उत्तम काव्य कहा गया है। यह अभिधा संघर्षरत, प्रतिबद्ध कवियों की सबसे बड़ी शक्ति है जिसका बड़ा सीधा सा कारण है कि सत्य अपना सर्वाधिक शक्तिशाली रूप अभिधा में ही प्राप्त करता है। कविता की अधिकतर अभिव्यक्ति अभिधात्मक है--

"तुम्हारे साथ चलना
हवा में हाथ लहराकर
उसकी लहर लहर पर
प्रतिरोध का गीत गाना है
और धरती के इंच इंच पर
प्रेम का मैनिफेस्टो लिखना।"

मैनिफेस्टो शब्द से कवि का आत्मीय जुड़ाव है। उसकी एक कविता का शीर्षक ही है 'बंजर होने का घोषणपत्र'। यह कविता इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि यह कवि की प्रतिबद्धता और उसके नारीवादी नजरिये को स्पष्ट करती है। वह कहती है कि मैंने अपनी देह को बंजर रहने ही दिया लेकिन धतूरे के बीज नहीं स्वीकारे। बहुत से धनी-मानी प्रेमी आये लेकिन मैंने उनके हाथों को देखकर जान लिया कि

कामिनी : शिक्षक और समीक्षक।
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अंबिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़
मो. : 8120094808 ईमेल : Kamini31284@gmail.com

वे मेहनतकश लोग नहीं थे। मुझे हमेशा से एक किसानी हाथ का इंतजार था--

"मेरी मिट्टी ने रास्ता देखा
धान के बीज से भरे
एक किसानी हाथ का

मेरे माथे ने प्रार्थना की
कि छूट जायें कुछ चिह्न उन पर
एक किसानी गीत के।"

यह कॉमरेडशिप की कविता है। कवि की अधिकतर कविताएँ इस ओर इशारा करती हैं कि उसका प्रस्थान बिन्दु मार्क्सवाद है और मार्क्सवादी नारीवाद ने उसकी चेतना के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वह अपने साथी के साथ हवा में हाथ लहराकर प्रतिरोध का गीत गाना चाहती है, मेहनतकश हाथों में अपना प्रेम पाना चाहती है। उसकी वर्गीय समझदारी स्पष्ट है। कवि तमाम अस्मितावादी विमर्शों की सीमाओं से परिचित है, पूँजी की चका-चौंध ने अस्मितावादी विमर्शों के समक्ष भ्रम और अँधेरे का जाल बिछा रखा है, जिसकी परिणति व्यापक वर्गीय एकता को छिन्न-भिन्न करने तक में होती दिखाई पड़ती है। इस बात को रेखांकित करने का यह अर्थ कतई नहीं है कि उसने अपनी लड़ाई वर्गीय एकता के नाम पर कुर्बान कर दी है। उसे अपनी लड़ाई की जगह पता है और कोई भी उसकी कसौटी से परे नहीं हैं। 'प्रगति का पहिया' नामक कविता में इसे साफ तौर पर देखा जा सकता है--

"अनखुला षडयंत्र सुनो जरा पहचानो इसको
मैं--मेरा प्रिय परिवर्तनकामी
विचारक है, आदर्श बहुत का

अनखुला षडयंत्र--तुम्हें पता है षडयंत्रों का?
छोड़ दिया स्त्री को अपने
कई झूठे आरोप लगाकर।"

कवि को मालूम है कि पितृसत्ता के संस्कार बहुत गहरे हैं वह बहुत बार बड़े-बड़े प्रगतिशीलों की खाल के भीतर छिपे रहते हैं और वक्त-बेवक्त बाहर आ जाते हैं जाहिर है यहाँ लड़ाई और चुनौतीपूर्ण हो जाती है। इस संग्रह में पितृसत्ताई और सामन्ती मूल्यों के पूर्वाग्रह से युक्त भाषा की भी बहुत सटीक पहचान की गई है।

कविता इस बात को बखूबी समझती हैं कि समाज में हर तरफ फैली नफरत की दीवार को प्रेम से ही जीता जा सकता है। इस अर्थ में इस संग्रह को नफरत के खिलाफ प्रेम के काव्यात्मक प्रतिरोध के रूप में देखा जा सकता है जो धर्म, ईश्वर, राष्ट्र की सीमाओं से परे जाकर आदमियत को हासिल करने की विश्व दृष्टि से संचालित है। यहाँ संग्रह की पहली कविता 'मेरे बेटे' उल्लेखनीय है--

"--मेरे बेटे
कभी इतने ऊँचें मत होना
कि कंधे पर सिर रखकर कोई रोना चाहे तो
उसे लगानी पड़े सीढियाँ
न कभी इतने बुद्धिजीवी
कि मेहनतकशों के रंग से अलग हो जाए तुम्हारा रंग
इतने इज्जतदार भी ना होना

कि मुँह के बल गिरो तो आँखे चुराकर उठो
×× ×× ×× ××
इतने धार्मिक मत होना
कि ईश्वर को बचाने के लिए इंसान पर उठ जाए तुम्हारा हाथ
न कभी इतने देशभक्त
कि किसी घायल को उठाने को झंडा जमीन पर ना रख सको।"

ऐसे समय में जब धर्म और देश की परिभाषा को बदलने की कोशिशें बदस्तूर जारी हैं और उस नाम पर जनता को हत्यारी भीड़ में तब्दील किया जा रहा है वहाँ यह कविता एक उम्मीद रचती है।

इस संग्रह की कविताओं की मूल विषयवस्तु प्रेम है। संग्रह में लगभग बीस कविताएँ प्रेम पर लिखी गई हैं। इस प्रेम की खास बात यह है कि यह बाँधने वाला नहीं मुक्त करने वाला है और मनुष्य को ऊँचा उठाकर एक विस्तृत फलक प्रदान करता है। कविता यहीं नहीं रुकती वह प्रेम के नाम पर स्त्री की सारी स्वतंत्रता और स्वायत्तता छीन लेने वाले बनावटी प्रेम और दिखावे को परत-दर-परत उघाड़ती चलती है। प्रेम का अर्थ पुरुष द्वारा स्त्री की यौनिकता पर नियंत्रण न होकर उसके साथ खड़े हो कर उसे उसकी समूची इयत्ता के साथ स्वीकार करना है। कविता इस बात पर बहुत सजग तरीके से जोर डालती हैं कि समाज की हर अन्यायी ताकत से लड़ने का एक मजबूत हथियार प्रेम है। प्रेम संबंधों में जब तक अधिकार-भाव समाप्त नहीं होगा उसके संकुचित बने रह जाने की पूरी संभावना है। इसीलिये ज्यादातर कविताओं में प्रेमी या पति की कामना की बजाय एक साथी की कामना है। 'तुम्हारे साथ चलना' कविता में वे इस बात को बहुत स्पष्ट तरीके से अभिव्यक्त करती हैं कि स्त्री और पुरुष जब बराबरी से हर काम में शामिल होते हैं तो धर्म, जाति, सम्प्रदाय, नैतिकता, वर्ग आदि की कितनी ही दीवारें ढह जाती हैं। साथ-साथ चलना केवल चलने भर की क्रिया न होकर इस पितृसत्तात्मक समाज में प्रतिरोध का प्रतीक है। इसी तरह की एक कविता है, 'तुम्हारी सोहबत के फूल' जो प्रतिरोध की इसी ताकत को अभिव्यक्त करती है। वर्तमान समय में हमारे समाज की या इन जैसे समाजों की एक और मुश्किल यह है कि स्त्रियाँ तो लगातार पढ़-लिख कर उस पितृसत्तात्मक समाज के षडयंत्र को भलीभाँति जान-समझ रही हैं और उस जाल से निकल कर आगे बढ़ गई हैं लेकिन उनके साथ इस लड़ाई में शामिल होने वाले पुरुषों की संख्या बहुत कम है। ऐसे में हर हालत में एक दूसरे के साथ खड़े रहना प्रतिरोध की संस्कृति का निर्माण करना है। प्रतिरोध की यह संस्कृति ही इस दुनिया में फैले तमाम विभेदों को दूर कर एक सुन्दर संसार का निर्माण कर सकती है।

इन प्रेम कविताओं का एक और महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य यह है कि वह प्रलोभन और दिखावे की भाषा के सच को भी उजागर करती हैं। समर्थवान लोगों द्वारा गढ़ी गई भाषा हमेशा एक विभेद पैदा करती है। यह भाषा पितृसत्ता के साथ-साथ हर तरह की सत्ता की भाषा है। 'गेहूँ और घुन' कविता भाषा के सत्ताधारी स्वरूप पर प्रकाश डालती है। भाषा कैसे असामान्य, असहज को सहज-सामान्य बना देती है, यह कविता इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है। गेहूँ के साथ घुन का पिसना दोषी के साथ निर्दोष को भी सजा मिलना है। हमारी भाषा में यह मुहावरा लगातार इस्तेमाल होता है लेकिन हमने कभी इसकी ओर ध्यान नहीं दिया कि निर्दोष को क्यों सजा मिलनी चाहिए? 'मुहावरे' नामक कविता भी इसी भाषाई छल को उजागर करने वाली कविता है। एक छोटी सी कविता 'नाव' में प्रेम की नई आकांक्षा की बानगी देखिये–

"तूफानों के बीच
तुम्हारे मुस्कुराते ओठ

Scanned with OKEN Scanner

फूल नहीं नाव
कितना आसान है
हहराते दरिया को पार कर जाना।''

यहाँ ओठ के फूल होने की कामना न होकर नाव हो जाने की कामना है, जिससे इस संसार के संघर्षों में एक सहारा मिल सके। इसी तरह 'देवताओं के बरक्स मनुष्य से प्रेम' कविता प्रेमी या पति की प्रेमिका या पत्नी के फिल्मी चरित्रों या आदर्शवादी गाथाओं के धीरोदात्त नायकों के बजाय इस धरती के वास्तविक मनुष्य के प्रति प्रेम की कविता है। वह मनुष्य जो दुनिया की तमाम कमियों और अच्छाइयों से युक्त है। एक ऐसा मानुषी प्रेम जो प्रेम के दिखावी लबादे को उतारकर सहज, सरल है।

प्रेम को एक नई आँख से देखने का कवि का यह भाव कविताओं के दायरे को बहुत व्यापक कर देता है। 'निकम्मे ईश्वर को घुड़की देना' कविता प्रेम के नए उपमानों की कविता है। 'मुझे प्रेम करते हो' कितना? इस कितना का जवाब बड़ा ही रोचक है जो सूरज, चाँद सितारे की आसमानी परिकल्पना के बजाय धरती के कारुणिक यथार्थ से लड़ने की ताकत से जुड़ा है--

''इतना
कि बिना कम्बलों वाले ठिठुरते शहर में
सूरज को लगा सकती हूँ कड़ी फटकार
उसके देर तक रजाई में दुबके रह जाने पर
×× ×× ×× ××
और उस ईश्वर को
जिसने धरती बनाकर
थमा दी है
सबसे क्रूर मनुष्यों के हाथ में
और खुद घोड़े बेचकर नीम बेहोश सोया है
मुर्दे की तरह।''

उनकी शेष कविताओं को इसी चेतना के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है। पूँजी, बाजार और धर्म का गठजोड़ मनुष्य के भीतर निरंतर डर पैदा करता है और इसी डर पर शोषण की पूरी की पूरी व्यवस्था टिकी हुई है। बहुत लम्बे समय से हाशिये की सभी आवाजों को इसी आधार पर चुप रखा गया है। जिस ईश्वर के नाम पर निरंतर शोषण किया जाता रहा है, जिस धर्म की हमेशा दुहाई दी जाती रही है, अगर वह वाकई है तो क्या वह उन शोषितों की आवाजों को नहीं सुनता है। यदि वह चंद उच्च वर्गीय लोगों का ईश्वर है तो हमें उसके आधार पर डराने वाली ताकतों की पहचान करना जरूरी है। 'बइमान प्रार्थनाएँ' कविता में कवि सवाल खड़ा करती है कि यह कौन सा ईश्वर है जो मेहनतकश लोगों के हिस्से को चुपचाप अपने हिस्से में डाल लेता है। वहीं 'ऊपरवाला' कविता में कवि पूँजी और धर्म के रिश्ते की पहचान करते हुए धर्म के नाम पर लगातार जल, जंगल, जमीन के साथ-साथ समस्त संसाधनों को लूटने वाली ताकतों को प्रश्नांकित करती हैं। दरअसल पितृसत्ता जिस व्यवस्था का नाम है उसके निर्माण में पूँजी का बहुत उल्लेखनीय योगदान रहा है। संपत्ति और उत्तराधिकार की अवधारणा के साथ ही स्त्री की यौनिकता पर नियंत्रण की शुरुआत होती है। विभिन्न समयों और क्षेत्रों में इसका स्वरूप बदलता रहा है। पितृसत्ता जिस शातिराना ढंग से अपनी कार्य-प्रणाली को अंजाम देती है, उसमें कई बार शोषक और शोषित दोनों इससे अनभिज्ञ रहते हैं इसलिए पितृसत्ता से लड़ाई निरंतर सचेत बने रहने की माँग करती है। इन कविताओं में यह समझ बहुत साफ व स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है--

"हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें
थाम कर बैठ सकती हैं हाथ
उन सभी अपरिचित पुरुषों के
जिनके हृदय हो रहे हैं विदीर्ण
अपनी स्त्रियों की प्रसव वेदना की
कातर चीख सुनकर
हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें
चूम सकती हैं माथे
उन सभी अपरिचित पुरुषों के
न्याय के लिए लड़ते हुए
जो हार रहे हैं हौसला।"

यह कविता नारीवाद की इकहरी समझ के वरक्स उसके बहुआयामी स्वरूप को उद्घाटित करती है। वर्गीय एकता की जो समझ इन कविताओं में दिखाई पड़ती है वह कवि को आन्दोलनधर्मी बनाती है। यह स्त्रियों के बहनापे से आगे बढ़कर उसके वर्ग चेतस होने की माँग करती है। कविता की भाषा भी आन्दोलनों से अर्जित प्रतीत होती है जिसमें तुर्सी के साथ खास तरह की कोमलता दिखाई पड़ती है। खास तरह की इसलिए क्योंकि वह प्रतिबद्धता का दामन कभी नहीं छोड़ती। विषय और कहन दोनों दृष्टियों से कविता कादम्बरी की कविताएँ संघर्ष और उम्मीद का संसार रचती हैं। निश्चय ही ये कविताएँ लंबी दूरी तय करेंगी।

समीक्षित कृति
हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें
कविता कादम्बरी
अंतिका प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner